अध्ययन सामग्री

एम. ए. सेमेस्टर 2

CC IX UNIT 3

डॉ० मालविका तिवारी
सहायक प्रोफेसर
संस्कृत विभाग
एच. डी. जैन कॉलेज
वी. कुं. सिं. वि. आरा

उत्तररामचरितम्

12.08.20

'उत्तररामचरितम्' में दयाङ्क का महत्त्व निरूपित कीजिए

भवभूति के 'उत्तररामचरितम्' नाटक का तृतीय अंक 'दया' अंक है जो पूरे नाटक का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अंश है। इसमें नाटकीय कार्य व्यापार रुका हुआ सा प्रतीत होता है किन्तु मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इस अङ्क का विशेष महत्त्व है। इसमें सीता अदृश्य रहकर पञ्चवटी के जनस्थान में दाम्पत्य सुख भोग की प्राचीन स्मृतियों से जाग्रत राम के विरह संताप को देखती है। यह अंक नाटकीयता से अधिक गीतिकाव्यात्मक हो गया है और इसमें भवभूति की भावुकता का तथा भवभूति के महान् करुण रस की मार्मिक व्यञ्जना हुई है। इस दृष्टि से यह अङ्क नाटक में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। इसमें कवि ने कारुण्य की प्रबलधारा प्रवाहित की है, जिससे चेतन तो क्या पत्थर भी रो पड़ते हैं।

मनोवैज्ञानिक आधार -

पञ्चवटी के रम्यस्थलों में पूर्वानुभूति की स्मृति से एक ओर तो राम के स्मृतिपटल पर सीता उद्भासित हो जाती है तो दूसरी ओर सीता भी राम से प्रगाढ़ प्रेम का परिचय पाकर बारह वर्ष के वियोग-जन्य सन्ताप और अकारण निर्वासन के क्षोभ के शमन का आधार प्राप्त करती है। यहाँ सीता अपने प्रगाढ़ प्रेमी पति राम के हृदय

की मार्मिक दशा का अवलोकन करती है। भवभूति ने अपनी कल्पना का प्रयोग करके सीता को राम की व्याकुलता का दर्शन कराने का अच्छा अवसर उपलब्ध कराया है। प्रजापालक राम को सीता की स्मृति में व्याकुल होने का सर्वोत्तम अवसर दण्डकारण्य में ही मिल सकता है। यदि कवि राम की इस व्याकुलता का प्रदर्शन करके राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी कार्यों के मध्य में कराते अथवा लक्ष्मण आदि भाइयों के बीच में कराते तो इस व्याकुलता पर सीता की सहानुभूति कदापि प्राप्त नहीं हो सकती थी।

भवभूति ने तृतीय अंक में सीता के विचारों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत अंक में राम की व्याकुलता का सीताजी के रामजी से सम्बन्धित विचारों पर उत्तरोत्तर अधिक प्रभाव पड़ता है। सीता राम को राजा और पति (आर्यपुत्र) के रूप में देखती हैं। उनकी धारणा है कि राम ने उन्हें मिथ्या कारणों से निष्कासित किया है, अतः उनका राम के प्रति आक्रोश होना मनोवैज्ञानिक आधार पर स्वाभाविक ही है। मूर्च्छित राम के पास बैठकर सीता के मनोभाव परिवर्तित होने लगते हैं। छाया सीता राम के इस प्रेममय स्मरण से अपने वनवास के कठिन दुःखों को भी लात मारकर अपने जीवन को धन्य समझती है। राम इस छाया सीता के स्पर्श का अनुभव तो अवश्य करते हैं, परन्तु आँखों से देख नहीं पाते। यहाँ कवि ने खूब ही 'काव्य न्याय' दिखलाया है। सीता को वनवास देनेवाले राम के रोदन को दिखाकर कवि ने सीता के अपमानित तथा दुःख भरे हृदय को बहुत शान्त किया है। करुण रस का प्रवाह जैसा इस अंक में दिखाया गया है वैसा कदाचित् ही कहीं दृष्टिगोचर हो। भवभूति ने बेजान पत्थरों को भी रामचन्द्र के विलापों में खूब ही रुलाया है। ऐसा चमत्कार किसी अन्य कवि ने नहीं पैदा किया है। करुण रस की पराकाष्ठा को लक्ष्यकर कोई आलोचक ठीक ही कहता है —

जडानामपि चैतन्यं भवभूतेरभूद्गिरा।
ग्रावाप्यरोदीत् पार्वत्याः हसतः स्म स्तनावपि ॥

नवीन कल्पना – उत्तरामचरित का 'छायाङ्क' और 'छाया सीता' की कल्पना रामायण में प्राप्त नहीं होती। यह भवभूति की उत्कृष्ट कल्पना है। इसी अंक में कवि को अनेक कौशलों से कारुण्य-धारा प्रवाहित करने का, वियोग सन्ताप से दग्ध पति-पत्नी को रुला-रुलाकर उनके मालिन्य एवं उदासीनता को दूर करने का पूर्ण अवकाश मिला है। अंक के आरम्भ में ही मुरला राम के शोक को पुटपाक के सदृश बताती है —

अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः।
पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः॥

मुरला कहती है कि ऐसे वियोगी लोगों की दुरवस्था भी कितनी अनूठी होती है जिसमें भागीरथी और पृथ्वी सहायता करती है। परिपाण्डु दुर्बल कपोलसुन्दर सीता करुणरस की मूर्ति अथवा देह धारण करने वाली जैसी लगती है। तमसा कहती है कि गोदावरी के हृदय से निकलकर आने वाली सीता को देखो —

परिपाण्डुदुर्बलकपोलसुन्दरं दध्मती विलोलकबरीकाननम्।
करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी विरहव्यथेव वनमेतिजानकी॥

चंचल कबरी सीता के मुख पर डोल रही है। बेचारी वियोग की वेदना की साक्षात् मूर्ति बनी हुई है।

पञ्चवटी के जनस्थान के दर्शन से राम को बड़ा शोक होता है, उन्हें मूर्च्छा आने लगती है —

अन्तर्लीनस्य दुःखानेरुद्दामं ज्वलिष्यतः।
उत्पीड इव धूमस्य मोहः प्राणावृणोतिमाम्॥

सीता का हृदय राम की मर्मस्पर्शी दशा को देखकर पिघल जाता है। तमसा सीता की इस दशा का – भावशबलता का – अत्यंत मार्मिक वर्णन करती है —

नाटस्थ्यं नैराश्यादपि च कलुषं विप्रियवशा–
द्वियोगे दीर्घेऽस्मिन्झटिति घटनात्स्तम्भितमिव।
प्रसन्नं सौजन्याद्दयितकरुणैर्गाढकरुणं
द्रवीभूतं प्रेम्णा तवहृदयमस्मिन् क्षण इव॥

अर्थात् तुम्हारा हृदय इस समय समागम की आशा के समाप्त हो जाने से उदासीन हो रहा है, अस्वस्थ हो रहा है और पति के सापवाद परित्याग रूप अप्रिय आचरण से क्रोधयुक्त की तरह कलुष या मलिन या आकुल हो रहा है और बहुत समय तक रहने वाले इस विरह में आकस्मिक मिलन से जडीकृत या स्तब्धप्राय हो रहा है और प्रिय के सौजन्यपूर्ण सम्बोधन के वाक्यों के सुनने और अनुराग दर्शन से प्रसन्न हो रहा है और प्रिय की करुण शोकव्यञ्जक वचनावली से अतिशोकव्याप्त हो रहा है। इस क्षण तुम्हारा हृदय प्रेम से द्रवीभूत की तरह हो रहा है। यहाँ भावशबलता का वर्णन है। यह पद्य काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों में भावशबलता के उत्तम उदाहरण के रूप में उद्धृत हुआ है।

इसी अंक में राम और सीता के प्रगाढ़ दाम्पत्य-प्रेम की पृष्ठभूमि में तमसा सन्तान को स्नेह की पराकाष्ठा और माता-पिता के परस्पर चित्त का अनुबन्ध घोषित करती है। सन्तान तो दाम्पत्य-जीवन की आनन्दग्रन्थि है।

वासन्ती सीता से राम की, विरही राम की दशा का मार्मिक वर्णन करती है। नेत्रों के उत्सव नवकुवलयस्निग्ध रंगवाले राम अब शोक से क्षीण इन्द्रिय वाले, धूसरवर्ण से युक्त और बहुत ही दुर्बल होकर बताने पर (ये वे ही राम हैं) ही किसी प्रकार पहिचाने जाते हैं।

नाटकीय गुण — राम और वासन्ती का संवाद इस अंक में अनेक नाटकीय गुणों से युक्त है।

वासन्ती राम से कह रही है कि आपने जिस सीता से यह कहा था कि 'तुम मेरा जीवन सर्वस्व हो, तुम्हीं मेरा दूसरा हृदय हो, तुम्हीं मेरे नेत्रों के लिए चाँदनी हो और तुम्हीं मेरे अंगों के लिए अमृत हो', उसी सीता के इस प्रकार से सैकड़ों चाटुकारिता भरी बातें करके और भरमाकर उसकी जो दशा (आपके द्वारा) की गई है उसका न कहना ठीक है।

त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयं
त्वं कौमुदी नयनयोरमृतं त्वमङ्गे ।
इत्यादिभिः प्रियशतैरनुरूध्य मुग्धां
तामेव शान्तमथवा किमिहोत्तरेण ॥

राम का हृदय शोक से फटा जा रहा है। उनके शोकभार की गम्भीरता (पूर्णता) पत्थर को भी प्रभावित करती है। वे धैर्य धारण करने में असमर्थ है। सीता भी आर्यपुत्र के इस दुर्निवार्य और कठोर आरम्भ वाले दुःख संयोग से बहुत दुःखी होती है।

तृतीय अंक के अन्त में तमसा के द्वारा महाकवि भवभूति ने 'एको रस करुण एव' कहलवाकर अपने करुण रस की प्रधानता सम्बन्धी सिद्धान्त की घोषणा की है।

प्रथम अंक से तृतीय अंक की घटना के बारह वर्ष के अन्तर को कवि ने लव-कुश की बारहवीं वर्षगाँठ तथा हाथी आदि चित्रों के वर्णन से व्यंजित किया है। इस अंक का 'छाया अंक' नामकरण सर्वथा उचित है। इसमें प्रथम, तमसा और सीता और राम तथा वासन्ती छाया के समान एक-दूसरे के साथ अनन्य रूप में दिखाई पड़ते हैं। दूसरे, राम के विचारों में सीता छाया के समान निरन्तर घूम रही हैं। तीसरे, राम और सीता दोनों एक-दूसरे से वियुक्त होकर शारीरिक दृष्टि से छाया के रूप में दिखाई पड़ते हैं। छाया सन्तप्त व्यक्तियों को सन्तोष प्रदान करती है।

इस अंक में शोक एवं क्षोभ के प्रलापों से तथा राम के दर्शन से सीता को उनके पश्चात्ताप से अत्यधिक सान्त्वना प्राप्त होती है। राम की पश्चात्ताप शुद्धि से दोनों (राम एवं सीता) के पारस्परिक स्पर्श से तमसा तथा वासन्ती को सन्तोष प्राप्त होता है। एक अन्य विशेष बात यज्ञ में सीता की स्वर्णमयी मूर्ति की चर्चा है, जिससे सीता को आश्वासन मिलता है कि राम दूसरा विवाह नहीं करेंगे। तृतीय अंक के अन्तिम श्लोक में राम एवं सीता के मिलने का भी आभास प्राप्त होता है—

अवनिरमरसिन्धुः सार्धमस्मद्विधाभिः ।
स च कुलपतिराद्यः छन्दसां यः प्रयोक्ता ॥

यह मंगल रूप आशीर्वाद दोनों के मिलन हेतु ही है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि तृतीय अंक चरित्र, भावना, काल एवं कारुण्य की दृष्टि से नाटक का हृदय-स्थल है। सीता को छाया रूप में रखकर उन्हें राम के पश्चाताप-पूर्ण विलाप से परिचित कराकर उनका राम के प्रति आक्रोश दूर किया है। उनके विचारों में अपने पति के लिए पुनः विश्वास उत्पन्न हो जाता है। यदि इस अंक की इस रूप में अवधारणा न हुई होती तो सीता के मन में राम के प्रति हमेशा दुर्भाव बना रहता। छाया-सीता का नाटकीय महत्त्व है। इस विधि से सीता तथा राम का अप्रत्यक्ष मिलन एवं सीता के विचारों में मनोवैज्ञानिक ढंग से परिवर्तन दिखाना है। राम और सीता के चरित्र-चित्रण में इस विधान से अत्यधिक सहायता मिलती है। सीता के मन का आक्रोश राम के पश्चातापपूर्ण विलाप से प्रेम, श्रद्धा और विश्वास में परिवर्तित हो जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि उत्तररामचरित का 'छाया' नामक अंक भवभूति को आदर्श दाम्पत्य-प्रेम के सफल कवि के रूप में, उत्कृष्ट मानवी अनुभूतियों के परिज्ञाता के रूप में और एक महान भावुक सहृदय कवि के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत करता है।